International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 3, March- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

इतिहास को जानने में मुद्राशास्त्र का योगदान

—कमल राणा—
शोधार्थी, (इतिहास), कलिंगा विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़

परिचय :

भारत में सास्ंकृतिक परम्पराएं बिना किसी बाधा के आज तक सुरक्षित है और यह देश अपनी प्राचीन सनातन सस्ंकृति और धरोहर पर गर्व कर सकता है। ऐसा नहीं है कि प्राचीन संस्कृति में कोई परिर्वतन नहीं हुआ अपितु समय—समय पर भारतीयों ने अपनी मान्यताओं और जीवन शैली में परिवर्तन किया है, लेकिन भारतीयों के मन में अपनी प्राचीन सस्ंकृति की याद ताजा बनी रही और इन्होंने हमेशा उससे अपना सम्बन्ध बनाए रखा। जहां तक मुद्राओं के आधार पर सांस्कृतिक इतिहास का पुर्ननिर्माण करने की बात है, इनके अन्तर्गत वेषभूषा, केश सजा, आभूषण, मनोरंजन, काव्य—प्रेम अभिरूचि, भाषा, लिपि, स्त्रियों की दशा, कला एवं स्थापत्य आदि विषयों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

वेषभूषा :

प्रारम्भिक भारतीय मुद्राओं से प्राचीन काल के लोगों की वेष—भूषा के बारे में ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है, चाँदी के आहत् सिक्कों को पुरातन सिक्का नहीं माना जा सकता। यद्यपि इन पर प्राप्त कुछ चिन्हों का पुरातन विचारधारा व टाटे मे (गण चिन्ह) से सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है।[1]

आहत सिक्कों पर विरले ही मानव आकृतियां देखने को मिलती हैं और जो भी हैं वे इतनी अस्पष्ट हैं कि उनसे सास्ंकृतिक जीवन की व्याख्या संभव नहीं है चाँदी के कुछ आहत सिक्कों पर तीन भद्दी मानव आकृतियाँ चित्रित हैं।

हिन्द—यवन शासकों के सिक्कों के अध्ययन से हमें समकालीन यवनों की वेषभूषा के बारे में पता चलता है। अधिकतर सिक्कों पर राजा का सिर व आवक्ष दिखाई देता है। जो सिर पर विभिन्न प्रकार की पोशाखें पहने हुये हैं। डेमेट्रियस तक के सिक्कों पर केवल सिर प्रदर्शित किया गया है जबकि उसके बाद निरन्तर जारी किए गए सिक्कों पर आवक्ष दिखाई देता है। इस कारण उनकी वेशभूषा के बारे में समुचित जानकारी नहीं मिलती। हिन्द—यवन सिक्कों पर दिखाई देने वाले वस्त्रों में हमें साधारणतया कीटान (Chiton) क्लामीज (Chlamys) और हिमेशन (Himation) दिखाई देता है। क्लामीज और कीटान पुरूषों के शरीर के उपरी भाग पर पहने जाने वाला वस्त्र था। हिन्द—यवन शासकों के कुछ सिक्कों पर राजा और देवता क्लामीज पहने हुए दिखाई देते

है।[2] क्लामीज एक आयताकार कपड़ा था जो दायें कन्धे को ढकता था और खुला हुआ सिरा बकसुए के साथ बायें कन्धे पर बांध दिया जाता था।[3]

हिन्द यवन शासकों के सिक्कों पर हमें दो प्रकार की कीटान दिखाई देती है। एक कीटान में वस्त्र घुटनों के जोड़ों तक फैला हुआ था।[4] जबकि दूसरे प्रकार के कीटान में वस्त्र कूल्हों के नीचे तक जाता था। हिन्द यवन शासकों के सिक्कों पर पुरूषों के शरीर के नीचे पहने जाने वाला वस्त्र हिमशेन चित्रित किया गया है। यह एक लम्बा आयाताकार कपड़े का टुकड़ा था जोकि आवश्यकतानुसार शरीर के चारों ओर विभिन्न प्रकार से लपेटा जाता था। कभी कभी हिमशेन का नीचे वाला सिरा पीछे की ओर लपेटा हुआ दिखाई देता है और कभी–कभी कपड़े का एक सिरा बायें कन्धें के उपर फैला हुआ और दाईं बाजू के नीचे दबाया हुआ दिखाई देता है।[5]

एन्टिमेक्स थिओस के कुछ सिक्कों पर पोसीडान और हेलिआक्लीज के कुछ सिक्कों पर ज्यूस हिमेशन पहने हुये दिखाई देता है।

डायाडोटस प्रथम और डेमेट्रियस के कुछ सिक्कों के पृष्टभाग पर अर्तीमस छोटी कीटान पहने हुए दिखाई देती है।[6]

अपोलोडोटस के कुछ सिक्कों पर अपोलो क्लामीज पहने हुए हैं।[7] हिन्द–यवन शासकों के सिक्कों पर स्त्रियों के शरीर के नीचे और उपर वाले भाग पर पहने जाने वाले वस्त्रों में प्रमुखतया कीतान और हिमेशन दिखाई देता है। कभी–कभी सिक्कों पर साड़ी और ब्लाउज भी चित्रित किया गया है।

पेन्टालियान के एक सिक्के के अग्रभाग पर प्राच्य वेशभूषा में एक लड़की नृत्य करती हुई दिखाई देती है, जिसने अपने दांये हाथ में फूल पकड़ा हुआ है। सम्भवतः यह उस काल के सांस्कृतिक जीवन का एक दृश्य है। हिन्द–यवन शासकों के सिक्कों के अध्ययन से हमें पता चलता है कि प्राचीन काल में लोग बहुत साधारण पहनावा पहनते थे। वह छोटी या पैरों तक लम्बी धोती पहनते थे और कन्धों को ढकने के लिये शाल लेते थे। स्त्रियां साड़ी पहनती थीं। सम्भवतः कपड़े बनाने की कला मौर्य काल से विशेषज्ञता के महत्वपूर्ण काल में आ चुकी थी। शकों ने अपने विदेशी उद्भव के कारण सिक्कों पर अपने आपको विदेशी वस्त्रों और आभूषणों में दिखाया है। शक शासक लबादा, पतलून, मुकुट, राजकीय मुकुट और नोकदार बूट इत्यादि पहने हुये दिखाई देते है। शक शासकों के सिक्कों पर चित्रित देवी–देवता भी विदेशी वस्त्र पहने हुये दिखाई देते हैं। वस्त्रों में छोटी कीटान पेवलम, बूट, फ्रीजियन, टोपी, क्लामीज इत्यादि विचारणीय है। टकसाल वालों ने सिक्कों पर विशेष पशुओं को कलात्मक डिजाइनों में दिखाया है। पशुओं के गले के चारों और घण्टियों, मालाओं और पीठ पर अलंकृत कपड़ों के साथ चित्रित किया गया है। शक शासकों के सिक्कों पर पुरूष क्लामीज और कीटान पहने हुये दिखाई देते हैं। यह वस्त्र

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 3, March- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

शरीर के उपरी भाग पर पहने जाते थे। क्लामीज एक छोटा लबादा था जिसका छोटा सिरा गर्दन के चारों और लपेटा जाता था और छाती पर जडाउ पिन के साथ इसे बांध दिया जाता था।

कुषाण काल के सिक्कों के अग्रभाग पर प्रायः राजा की खड़ी हुई आकृति दिखाई देती है। वह साधारणतयः पूरी बाहों वाला लम्बा कुर्ता, तंग पायजामा और ऊंचे बूट पहने हुये दिखाई देता है। वह सिर पर एक लम्बी शंक रूपी पोशाख भी पहने हुये है। यह पहनावा हमें मथुरा की कुषाण मूर्तिकला में भी दिखाई देता है। लम्बी बाहों वाले कोट के आस्तीन और बाहों पर कभी–कभी बेल बूटे कढे हुये दिखाई देते हैं। यह कोट घुटनों के नीचे तक जाता है और इसलिये यह साहित्य में उल्लिखित चाईना चोलक की तरह दिखाई देता है। कुषाणों की उपलब्धियों को देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि इनका उद्‌भव भी चीन में हुआ और इन्होने इसे मध्य एशिया में अपने स्वदेश से ग्रहण किया। यह वस्त्र उत्तरकाल तक लोकप्रिय बना रहा। यहां तक कि गुप्त शासक भी यही वस्त्र पहने हुए दिखाई देते हैं। इसके अतिरिक्त उत्तरकालीन अजन्ता चित्रकला में ही इसके उदाहरण दिखाई देते हैं। यह मध्य युग तक भी जारी रहा जबकि इसे चोगा कहा जाता था। वीमा कडफिशस के सिक्कों पर वह भारी कोट पहने हुए दिखाई देता है।[8]

कनिष्क के सिक्कों पर भी वह कुषाण प्रतिरूप भारी कोट पहने चित्रित किया गया है। कुषाण सिक्कों पर क्लामीज भी चित्रित किया गया है। क्लामीज एक छोटा लबादा था जो कि शाल की तरह ओढा जाता था। हुविष्क के एक सिक्के पर राजा कवच के उपर क्लामीज पहने हुए दिखाई देता है। कडफिशस द्वितीय भी अपने एक सिक्के पर यूनानी क्लामीज पहने हुये दिखाई देता है।[9]

यौधेयों के सिक्कों से भी उनकी वेषभूषा के बारे में प्रर्याप्त जानकारी मिलती है। प्राचीन काल में धोती काफी लोकप्रिय थी।[10] योधयों के सिक्कों पर कार्तिकेय और शिव धोती पहने हुये दिखाई देते हैं। एक बड़ी संख्या में सिक्कों पर दुपट्‌टा चित्रित किया गया है। कुणिन्दों के कुछ विशेष सिक्कों पर स्त्रियां दुपट्‌टा पहने हुए दिखाई देती हैं। प्राचीन काल में भारतीय पुरूष साधारणतयः अपने सिर पर पगड़ी पहनते थे। भारत के कुछ विशेष भागों में यह अभी भी बहतु लोकप्रिय है। यह पगड़ियां विशाल थी और कपड़े की पट्‌टियों से बनी हुई थीं जो सिर के उपर लपेटी जाती थीं। यह पगड़ी कई प्रकार के अलंकृत नमूनों में बांधी जाती थी। उनमें से कुछ नमूने सिक्कों पर दिखाई देते हैं। यौधेयों के कुछ विशेष प्रकार के सिक्कों पर कार्तिकेय पगड़ी पहने हुये चित्रित किया गया है, जो एक प्रकार से धारियों वाला कपड़ा सिर के चारों ओर बंधा हुआ प्रतीत होता है।

प्राचीन काल में धोती भी एक अन्य लोकप्रिय पोशाक थी। काफी संख्या में गुप्त सिक्कों पर धोती भी चित्रित की गई है। सिंह निहन्ता और पर्थक प्रकार के सिक्कों पर चन्द्रगुप्त द्वितीय लंगोट पहने हुये दिखाई देता है। गुप्तकालीन सिक्कों पर लबादा बहुत कम दिखाई देता है। समुद्रगुप्त के धनुर्धारी प्रकार के केवल एक सिक्के पर इसके स्पष्ट उदाहरण मिलते हैं। यह वस्त्र उद्भव में सासनियन है और उन्होंने बाणभट्ट द्वारा उल्लिखित अछादनक के साथ इसका सम्बन्ध स्थापित किया है।

चित्रकला में इस वस्त्र के कुछ उदाहरण मिलते हैं ऐसा प्रतीत होता है कि यह वस्त्र भारत में लोकप्रिय नहीं था। गुप्तों में दुपट्टा या चादर का भी बहुत रिवाज था। यह छाती के आर–पार ओढ़ा जाता था। कभी–कभी यह दायीं बाजू के चारों ओर भी लपेटा जाता था। समुद्रगुप्त और चन्द्रगुप्त द्वितीय अपने सिक्कों पर दुपट्टा पहने हुये चित्रित किए गए है। सम्भवतः यह धोती ओर कुर्ते के साथ संयोजन में पहना जाता था। इस आवरण या शाल का संस्कृत साहित्य में उल्लिखित उतरीय के साथ सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है। अजन्ता चित्रकला में भी कन्धों पर शाल चित्रित की गई दिखाई देती है।[11]

केश–सज्जा :

प्राचीन सिक्कों के द्वारा प्राचीनकाल के लोगों के केश–सज्जा के बारे में भी महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है। आहत् सिक्के को प्राचीन सिक्का माना गया है लेकिन आहत सिक्कों पर विरले ही मानव आकृतियां देखने को मिलती है और जो भी हैं, वे इतनी अस्पष्ट है कि इनसे सांस्कृतिक जीवन की व्याख्या सम्भव नही, चांदी के कुछ आहत सिक्कों पर तीन भद्दी मानव आकृतियां चित्रित है। इनमें से मध्य स्थित आकृति के बाल, स्पष्ट रूप से एकत्र हैं। जिससे उस काल के लोगों की केश–सज्जा का कुछ अनुमान लगाया जा सकता है, इन सिक्कों में अंकित मानव आकृति में सिर के पीछे जुड़ा बंधा है। दांई और वाली आकृति के बाल लम्बे उड़ते हुए व खुले दिखाई देते हैं। यह कहना कठिन है कि ये आकृतियां पृथ्वी देवी या किसी अन्य देवों को दर्शाती है।[12]

हिन्द–यवन शासकों के अधिकतर सिक्कों पर बाल घुंघराले, छोटे कटे हुए और फीते से बंधे हुए दिखाई देते हैं।

अगाथोक्लीज के सिक्कों पर घने, भारी और उलझे हुये बाल दिखाई देते है, जो कानों के पीछे लपेटे हुये है। अगाथोक्लीज के कुछ विशेष सिक्कों पर कन्धों तक लम्बी चोटी कानों को छिपाती हुई सिर के चारों ओर दिखाई देती है।

डायोडोटस और येक्रेटाइडीज द्वितीय के सिक्कों पर कोमल तंरगिका में और फीते के साथ

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 3, March- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

बंधे हुये दिखाई देते हैं। डेमेट्रिस द्वितीय के कुछ सिक्कों पर भारी बाल चित्रित किए गए हैं, लेकिन वह मनोहर और रोयेदार कुण्डल फीते से सुरक्षित हैं। कुषाण कालीन सिक्कों पर स्त्री आकृतियों के लम्बे बाल साधारणतयाः ग्रन्थि में इक्ट्ठे हुये दिखाई देते हैं। मथुरा मूर्तिकला से पता चलता है कि कुषाणकाल में स्त्रियां अपने सिर के दोनो ओर के बालों का मध्य में एक पुंज बांध देती थी।[13]

अजन्ता के चित्र भी इस बात के साक्षी हैं कि बालों को सजाने की व्यवस्था स्त्री और पुरूष दोनों में लोकप्रिय थी। सिर पर बालों का समूह कभी–कभी बुद्धमूर्ति के बालों की तरह बाहर को निकला हुआ दिखाई देता हैं।[14] कभी–कभी बाल सिर के पीछे समूह में बांधे जाते थे। यह पद्धति स्त्रियों में बहुत लोकप्रिय थी। स्त्रियां प्रायः अपने गर्दन की घटिका पर बालों को जुड़े के रूप में इकट्ठा कर लेती थी।

आभूषण :

सिक्कों पर अंकित आकृतियों तथा चिन्हों से हमें प्राचीन काल में लोगों द्वारा धारण किये जाने वाले आभूषणों के बारे में भी जानकारी मिलती है। आहत सिक्कों पर क्योंकि मानव आकृतियां चित्रित नहीं हैं। जो मानव आकृतियां चित्रित हैं, उनसे आभूषणों का ज्ञान प्राप्त नहीं होता, आहत सिक्कों पर मानव आकृतियों का अंकन बहुत कम देखने को मिलता है। आहत सिक्कों पर केवल प्रतीक चिन्हों जैसे सूर्य, षड्चक्र, पर्वत, हाथी, त्रिकोणे शीर्ष वाला दण्ड, अर्द्वचन्द्र, श्री वत्स, वैद का वृक्ष आदि का बार–बार चित्रण हुआ है। इन सभी चिन्हों का सम्बन्ध पशु, वनस्पति–जगत व प्रकृति से है। आभूषण का स्पष्ट रूप से कहीं भी अंकन देखने को नहीं मिलता।

हिन्द–यवन सिक्कों पर अनेक राजाओं की आकृतियों के अंतर्गत विभिन्न प्रकार के आभूषण धारण किये हुए दर्शाये गये हैं। कभी–कभी राजा, जैसे यूक्रेटाईडीज बिना मुकुट के भी चित्रित किया गया है।[15]

हिन्द–यवन सिक्कों पर राजा फीता बंधा मुकुट, हैलमेट, फोसिया, हाथी के सिर की खाल और फ्रीजियन टोपी पहने हुये दिखाई देता है। डेमेट्रियस और लाइसियस के सिक्कों पर राजा हाथी के सिर की खाल पहने हुये दिखाई देता है जबकि एन्टिमेक्स के सिक्कों पर राजा कोसिया पहने चित्रित किया गया है।[16]

चन्द्रगुप्त द्वितीय के सिंह निहन्ता प्रकार के सिक्कों पर सोने की तीन गोले पट्टियों से बना बाजूबन्द चित्रित किया गया है। इसी शासक के धनुर्धारी प्रकार के सिक्कों पर सुन्दर, असाधारण और आभूषण दिखाई देता है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह सोने का बना है और

इसके किनारे अण्डाकार है। इसके ऊपर बड़े मोती लगे हुये हैं। कुमार गुप्त के धनुर्धारी प्रकार के सिक्कों पर भारी गोल सोने की पट्टी चित्रित की गई है जो जड़े मोतियों से जड़ी हुई हैं।

गुप्त सिक्कों पर करधनी देवताओं की कमर की शोभा को बढ़ाती है। चन्द्रगुप्त द्वितीय के एक सिक्के पर वामन नौकर करधनी पहने हुये दिखाई देता है। गुप्त सिक्कों पर साधारणतया दोहरी लड़ियों वाली और मनकों या मोतियों वाली करधनी दिखाई देती है। गुप्तकाल में तीन लड़ियों वाली करधनी का भी प्रयोग होता था। मथुरा मूर्तिकला में भी तीन या चार लड़ियों वाली करधनी चित्रित की गई है। कुमारगुप्त के अश्वारोही प्रकार के एक सिक्के पर मोतियों वाली करधनी चित्रित की गई है जिसके ऊपर कम से कम छः बड़े मोती हैं। चन्द्रगुप्त द्वितीय के धर्नुधारी प्रकार के सिक्कों पर देवी लक्ष्मी पांच लड़ियों वाली करधनी पहने हुये दिखाई देती है।

निष्कर्ष :

प्राचीन भारतीय ऐतिहासिक मुद्राओं के आधार पर महत्वपूर्ण सांस्कृतिक व सामाजिक सूचनाएं भी प्राप्त होती हैं। इसके अन्तर्गत वेषभूषा, केश–सज्जा, आभूषण, क्रीड़ा, मनोरजंन, संगीत, काव्य, व्यक्तिगत अभिरूचि, आयु व अवस्था तथा शिक्षा को स्थान दिया गया है इस दृष्टि से भारतीय यवन से लेकर गुप्त काल तक ही मुद्राएं विशेष महत्व रखती है।

संदर्भ :

1. Chakravarti, Swati, 1986, Social-Religious & Cultural Study of the Ancient Indian Coins, Delhi, P. 347
2. Chakravarti, Swati, 1986, Social-Religious & Cultural Study of the Ancient Indian Coins, Delhi, P. 347
3. Srivastava, A.K., 1969, Catalogue of Indo-Greek Coins in the State Museum, Lucknow, P. 29
4. Lahiri, A.N., 1965, A Corpus of Indo-Greek Coins, Calcutta.
5. Chakravarti, Swati, 1986, Social-Religious & Cultural Study of the Ancient Indian Coins, Delhi, P. 206
6. Gardner, P, The Coins of Greeks & Scythic Kings of Bactria and India in the British Museum, London, P. 3 & 7
7. Srivastava, A.K., 1969, Catalogue of Indo-Greek Coins in the State Museum, Lucknow, P. 18-19
8. Whitehend, R.B.1914., Catalogue of the Coins in the Punjab Museum, Oxford.

9. Gardner, P.1986, The coins of Greeks & Scythic Kings of Bactria and India in the British Museum, London.
10. Gardner, P.1986, The coins of Greeks & Scythic Kings of Bactria and India in the British Museum, London.
11. Chakravarti, Swati, 1986, Social-Religious & Cultural Study of the Ancient Indian Coins, Delhi, P. 205.
12. Chakravarti, Swati, 1986, Social-Religious & Cultural Study of the Ancient Indian Coins, Delhi, P. 347.
13. Chakravarti, Swati, 1986, Social-Religious & Cultural Study of the Ancient Indian Coins, Delhi, P. 347
14. Atekar, A.S., 1957, The Coinage of the Gupta Empire, Varanasi, P. 208
15. Gardner, P.1971, The Coins of Greeks & Scythic Kings of Bactria and India in the British Museum, London, P. 18
16. Srivastav, A.K., 1969, Catalogue of Indo-Greek Coins in the State Museum, Lucknow.